ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
PP. NO. 66-68
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

समकालीन जीवन यथार्थ और नागार्जुन का काव्य संसार

गुजन पाठक
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, प्रभा देवी पी0जी0 कालेज खलीलाबाद, संतकबीर नगर(उ0प्र) भारत

किसी भी कवि की सृजनात्मकता 'ज्ञान–संवेदना' के अनेक स्तरों को उद्घाटित करती है। इस प्रक्रिया में कवि यथार्थ और सत्य के विविध रूपों से टकराता है और अन्ततः वस्तुओं, घटनाओं और विचारों के द्वन्द्व से गुजरकर वह सत्य और यथार्थ के व्यापक फलक को व्यंजित करता है। नागार्जुन की काल के दीर्घ आयाम मे (लगभग 55 वर्ष तक) घटित होने वाली काव्य–यात्रा इस बात का सबूत है कि कवि लगातार सष्जनकर्म को जीवंतता देता रहा और जन–संघर्ष को वाणी, इस सारी काव्य यात्रा में उनकी सृजनात्मकता अनेक आयामी रही। नागार्जुन के बारे में केदारनाथ सिंह का कथन है– ''उनके पास अनुभव और विचार की वह अर्जित भूमि है, जहाँ से वे प्रहार करते हैं और हर बार जब वे प्रहार करते है तो कुछ न कुछ बहुत मूल्यवाद दाँव पर लगा होता है, जिसे वह हर कीमत पर बचा लेना चाहते है। अक्सर जो दाँव पर लगा होता है, वह इस देश का सबसे पीड़ित जन।''

नागार्जुन जीवन के यथार्थ के प्रति ईमानदार रहे है। उनका यथार्थ केवल मार्क्सवाद से आयातित अनुभव नही है। बहुत कुछ उनका प्रत्यक्ष अनुभव है। नागार्जुन एक ऐसे जन कवि है जिसे अपनी अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्यात्मक यथार्थवाद ही सबसे बड़े हथियार के रूप में प्राप्त है।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

नागार्जुन उन कवियों की परम्परा में है, जिन्होंने साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, पूँजीवाद के विरोध में अपने व्यंग्यात्मक यथार्थवाद का विकास किया है। 'तालाब की मछलियाँ' में संकलित 'विजयी के वंशधर' कविता सामंतवादव की व्यंग्यपूर्ण आलोचना है। यह आलोचना परिस्थिति के यथार्थ दर्शन से पैदा हुई। इस व्यंग्यात्मक यथार्थवाद में शब्दों का चुनाव और उपमाओं का व्यंग्य देखने योग्य है। ''गुलाबी धोती। सीप की बटनों वाला रेशमी कुर्त्ता। मलमल की दुपलिया, फूलदार टोपी/बाटा के बम्पन्शू/नेवले के मुँह सी मूठ की नफीस घड़ी.....'।[2] खस्ता सामान्ती शान बधारने वालों पर नागार्जुन का व्यंग्य स्पष्ट है। मामूली असामी रैयत बनाम प्रजा जिस शोषण चक्र में फंसी हुई है, उसे कवि ने व्यंग्य की भाषा में प्रकट कर दिया है। पूँजीवादी सत्ता प्रजा के कष्ट को नहीं देखती वे धनपतियों के हित को ही सुरक्षित रखती है। उन पूँजीपतियों को कबीर की भॉति डॉट–फटकार कर सुनाने का साहस नागार्जुन में था–

निम्न वर्ग की ऑतकवच पर
नसें दूह कर मिडिल क्लास की
रखों ठीक बैलेंस बल्कि कुछ बचत दिखाओं
छोटे–बड़े मगरमच्छों को अभयदान दो।[3]

नागार्जुन की ''युगधार'' ''प्रेत का बयान'' ''प्यासी पथराई ऑखें'' ''खिचड़ी विप्लव देखा हमने'' और पुरानी ''जूतियों का कोरस'' कविताऐं यथार्थ की चट्टानों से टकराते है। समाज के सजग पहरूए की भाँति उनकी दृष्टि से सामाजिक विषमताओं के जिम्मेदार लोगों की बखिया उधेड़ी है। शोषक सत्ताधीशों, जर्जर रूढ़ियों पर नागार्जुन के व्यंग्य बज्र बनकर टूटे है। मजदूरों और किसानों के हिमायती नागार्जुन प्रधानतः व्यंग्य के कवि है। नागार्जुन ने महाजनी सभ्यता के ठेकेदारों और पहरेदारों की काली कारतूतों पर तीखे व्यंग्य लिखे हैं–

लाख–लाख श्रमिको की गरदन कौन रहा है रेत
छीन चुका है कौन करोड़ों से खेतिहरों के खेत
किसके बल पर कूद रहे है सत्ताधारी प्रेत।।

इस तरह पूँजीपतियों की सत्ताधीशों से साठगांठ भंडाफोड करते हुए नागार्जुन कहते है–

खादी ने मखमल से अपनी साठ–गांठ कर डाली।
टाटा–बिड़ला डालमिया की तीसों दिन दीवाली है।।

नागार्जुन ने जिन्दगी की किताब को अच्छी तरह पढ़ा है। इसलिए इनकी व्यंग्य कविताएं भी ''ऑखिन की देखी है'' वे किसी स्वप्नलोक की उपज न होकर इसी खुरदरी धरती की उपज हैं। प्रभाकर माचवे ने बहुत ठीक लिखा है कि ''प्रकषति उनके लिए अधूरे सपनों का नीड़ कभी नहीं रही। वहॉ पलायन कर इस धरती के दुःख–दर्द को भूल जाने की बात कभी मन में नही ठानी''[4] इसलिए चाहे प्राकृतिक दृश्य हो या प्राकृतिक विषयों पर मानवीकरण का आरोपण हो, सर्वत्र

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

वे अपने आस–पास के पूरे जीव और जगत की विसंगतियों को भूल नही पाये हैं।

हम कह सकते है कि पिछले पचास वर्षो में नागार्जुन जैसा सीधी और तीखी चोट करने वाला निराला को छोड़कर दूसरा कोई नहीं हुआ। निराला के व्यंग्यबोध का विकास नागार्जुन ने किया है।

''नागार्जुन की कविता गली, सड़क, बाजार, नुक्कड़, मैदानों में पहुँचकर कविता की बृहत्तर सामाजिक भूमिका का साक्ष्य या उदाहरण बनकर सामने आयी तो उसे पुनः केन्द्रीय महत्व प्राप्त करते देर न लगी''[5]

सामाजिक यथार्थ की भूमि पर जन जीवन तथा धरती की महिमा को चित्रित करते हुए सामाजिक बोध उनकी कविता में स्पष्ट रूप में सामने आया है–

मंडराती है यम की नानी खेतो में खलियानों में,
भूख–अकाल–महामारी की फसल उगी मैदानों में,
लूट–पाट की होड़ मच गई नरभक्षी हैवानों में
लकट रहा है ताला गल्ले की सरकारी दुकानों में।।[6]

नागार्जुन का कविता संसार जनता के लिए तड़फड़ाता है, छटपटाता है। नागार्जुन की निगाह धरती के उस हिस्से की ओर है जहाँ एक विशाल समुदाय अपने भविष्य को सुखी को बनाने के लिये अंगडाई ले रहा हे। वह समुदाय है–गरीब, शोषित, पीड़ित, अन्धविश्वारों में पिस्ता हुआ, श्रम के बदले खुद घिसता हुआ, दीन–हीन उपेक्षित पद–दलित, क्रीतदास, जिनका कवि पक्षधर है। नागार्जुन जनता के कवि नही जनता द्वारा स्वीकृत कवि है, वे निरन्तर इस प्रयत्न में लगे रहते हैं कि कविता को जनता तक पहुॅचाया जाय, काव्य रूपों को लेकर निरन्तर प्रयोग करते रहते है। यहाँ भी संस्कृत की परम्परा का परोक्ष संस्कार कहीं–कहीं उनकी कविता में भाषित होता है। ''आकाल और उसके बाद कविता''–

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उसके पास
दाने आये घर के अन्दर कई दिनों के बाद
धुँआ उठा आँगन के ऊपर कई दिनो के बाद
चमक उठी घर भर की आँखे कई दिनों के बाद।[7]

यथार्थ के इस चरित्र में परिस्थिति का निर्मम् रूप उद्घाटित है जिसे प्रतीक और संकेत की आवश्यकता नहीं है। नागार्जुन हर अनुभव को अपनी आँख से देखना चाहते हैं। यहाँ उनका दृष्टिकोण कबीर जैसा है–''तू कहता कागद की लेखी मैं कहता हूँ आँखिन देखी।''

नागार्जुन के समय जो समाज था वह जीर्ण–शीर्ण, विषमताओं के अम्बारों से आछन्न, धुंध और कुहांसा से घिरा हुआ था किन्तु इस अभेद चक्रव्यूह को भेदकर उनका रहस्योद्घाटन करने की क्षमता उनके लक्षित होती है। नेताओं के नारे और सरकारी घोषणायें मात्र जालसाजी के इजहार है। देश की स्थिति का वित्रण देखिये–

जंमीदार हैं, साहुकार हैं, बनियाँ है, व्यापारी है,
अन्दर–अन्दर विकट कसाई, बाहर खद्दर धारी है।[8]

उन्होंने गाँधीवाद, सत्य, अहिंसा कांग्रेस, अफसर शाही, नौकरशाही, पुलिस आदि की धज्जियां उड़ा दी है। वे लिखते है–

पेट–पेट में आग लगी है, घर–घर मे है फांका
यह भी भारी चमत्कार है, कांग्रेसी महिमा का
तीन रात में तेरह जगहों पर पड़ता है डाका
यह भी भारी चमत्कार है कांग्रेसी महिमा का।।

गाँधी जी को संबोधित कर लिखी गई कविताएँ भी बड़ी संख्या में है और ये अधिकतर व्यंग्य के मुहावरे में है। आजादी की रजत जयंती को व्यंग का विषय बनाते हुए नागार्जुन कहते है–

अस्सी प्रतिशत दीन जनों की कष्ट कथा है रजत जयंती,
पर दुःख–कातर तपोधनों की विकट व्यथा है रजत जयन्ती।।[9]

राजनीतिक कविताओं में नागार्जुन का यथार्थवाद अधिक मुखर जान पड़ता है। नागार्जुन यथार्थ को वाणी देते

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

हुए कला मूल्य की अतिरिक्त चिन्ता नहीं करते। उनकी कविता यदि शब्दस्फीत का शिकार हुई है तो उसकी नागार्जुन परवाह नही करते। उनका स्पष्टीकरण है–

जनता मुझ से पूछ रही है, क्या बतलाऊँ?
जनकवि हूँ मैं साफ कहूंगा, क्यों हकलाऊँ?
नेहरू को तो मरे हुए सौ साल हो गये
अब जो हैं वो शासन के जंजाल हो गये।।[10]

आश्चर्य नहीं कि उनकी कविता में समकालीन राजनीति और सांस्कषतिक परिवेश से जुड़े संदर्भ बार–बार आते हैं। नागार्जुन के लिए कुछ भी कविता के बाहर नहीं है चाहे वह अत्यन्त सामान्य यथार्थ ही क्यों न हो। जीवन के अत्यन्त परिचित यथार्थ को नागार्जुन इस प्रकार चित्रित करते हैं कि वह एक व्यापक यथार्थ का अंग बन जाता है। वे ऐसा केवल लिखकर ही नही करते बल्कि शायद हिन्दी के वे अकेले कवि है जो 'कवि सम्मेलनी' न होकर भी अपनी कविताऐं सबसे ज्यादा जनता को सुनाई है चाहे वह मीटिंग हो, सभा हो, नुक्कड़ सभा या नुक्कड़ काव्य पाठ हो। डॉ0 नामवर सिंह का कथन है–''इस बात में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कि तुलसीदास के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि है जिनकी कविताओं की पहुँच किसानों की चौपाल से लेकर काव्य रसिको की गोष्ठी तक है। नागार्जुन सच्चे अर्थो में स्वाधीन भारत के जनकवि है।''

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागार्जुन की काव्य यात्रा : डॉ0 रतन पृ0–4
2. तालाब की मछलियाँ : नागार्जुन, पृ0–57
3. तालाब की मछलियाँ : नागार्जुन, पृ0–158
4. हंस मई 1949
5. नागार्जुन की व्यंग्य कविताएँ : रमाकान्त शर्मा (मार्च 1996 कल के लिए पं0) पृ0–37
6. नागार्जुन की कुछ चुनी हुई कविताएँ, पृ0–4
7. सतरंगो पंखों वाली : नागार्जुन, पृ0–32
8. 'सच न बोलना' नागार्जुन की काव्य यात्रा में प्रकाशित, पृ0–28
9. तुमने कहा था, –पृष्ठ–57
10. तालाब की मछलियाँ पृ0–12

*****